29.

म.प्र. मे जैविक कृषि एवं उससे होने वाले लाभ

श्रीमती मेघा जैन
शौधार्थी (वाणिज्य)

1. प्रस्तावना – प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदाथों के बीच आदान प्रदान का चक्र Ecological System निरंतर चलता रहता था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ–साथ गौपालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रंथो में प्रभु कृष्ण और बलराम है जिन्हें हम गोपाल हलधर के नाम से संबोधित करते है। अर्थात कृषि एवं गौपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जौकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परंतु बदलते परिवेश में गौपालन धारे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रसायनिक खादों वा कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदाथों के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादिन प्राप्त कर सकते है जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वतस्थ रहेंगे।

मध्यप्रदेश में रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के अन्धानधुंध उपयोग से भूमि, मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर पड़ रहे कु प्रभाव को रोकने के लिए मध्यधप्रदेश में जैविक कृषि नीति का क्रियान्वयन प्रारंभ किया गया है योजना का मुख्य उद्देश्य भूमि के जीवाश्म एवं जीवाणुओं का संरक्षण करना, प्राकृतिक संसाधनों तथा आर्गेनिक वेस्ट का यथा स्थति सदुपयोग करना, जल स्त्रोंतो तथा मिट्टी को प्रदुषण मुक्ता रख स्वथस्थ्य पर्यावरण का निर्माण करना तथा उत्पादन लागत में कमी लाकर टिकाऊ खेती के तरीकों का विकास कर खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने हेतु राष्ट्रीय विकास योजनान्तर्गत बजट राशि का प्रावधान करना है प्रदेश में जैविक कृषि का उत्पानदन 5 लाख मैट्रिक टन हो गया है यह भारत में होने वाले कुल जैविक कृषि उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत है इसके जरिए मुख्य रूप से कपास, गेंहु अन्य अनाज फल, सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में सर्वप्रथम 2001–02 में जैविक खेती का आंदोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के एक गांव का नाम दिया गया। इस प्रकार प्रथम वर्ष में कुल 313 ग्रामों में जैविक खेती की शुरूआत हुई। इसके बाद 2002–03 में तृतीय वर्ष में प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकासखण्ड के दो–दो गांव अर्थात 1565 ग्रामों में जैविक खेती की गई। वर्ष 2006–07 में पुनः प्रत्येक विकासखण्ड में 5–5 गांव चयन किये गये। इस प्रकार प्रदेश के 3130 गावों में जैविक खेती का कार्यक्रम किया गया। मई 2002 में राष्ट्रीय स्तर का कृषि विभाग के तत्वाधान में भोपाल में जैविक खेती पर सेमीनार आयोजित किया गया जिसमें राष्ट्रीय विशेषज्ञों एवं जैविक खेती करने हेतु प्रोत्साहन किया गया। प्रदेश के प्रत्येक जिले में जैविक खेती के प्रचार–प्रसार हेतु चलित झांकी, पोस्टर्स बेनर्स, साहित्य, एकल नाटक, कठपुतली प्रदर्शन जैविक हाट एवं विशेषज्ञों द्वारा जैविक खेती पर उद्बोधन आदि के माध्यम से प्रचार–प्रसार कर कृषकों में जन जागृति फैलाई गयी।

2 मध्यप्रदेश जैविक कृषि नीति 2011– मध्यप्रदेश सरकार ने जैविक कृषि नीति 2011 को जुलाई, 2011 को मंजूरी दी है, इस नीति के प्रमुख उद्देश्य जलवायु परिवर्तन एवं वैश्वीकरण का कृषि उत्पादों पर पडने वाले प्रभावों को कम करना तथा उत्पादन एवं

उत्पादकता दोनों में वृद्धि लाना है इस नीति को समस्त धान्य फसलों, सब्जियों फल मसाले एवं सुगंधित एवं औषधीय फसलों पर लागू किया गया।

जैविक कृषि नीति 2011 के प्रमुख प्रावधान –

I – वन आधारित उत्पादों को प्रोत्साहन देना
II – जैविक कृषि हेतु नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन
III – सुरक्षित एंव अक्षय कृषि को बढावा देना
IV – जैविक प्रमाणीकरण को प्रोत्साहन देना
V – बायोगैस को बढावा देना

3– जैविक खेती हेतु प्रोत्साहन योजना –

12वी पचंवर्षीय योजना में जैविक नीति के अनुरूप जैविक खेती को प्रोत्साहन देने हेतु जैविक खेती प्रोत्साहन योजना प्रारंभ की गई है जिसमें इस पचंवर्षीय योजना में 70 करोड रूपये का प्रावधान रखा गया है वर्ष 2012–13 हेतु 500 लाख रूपये का प्रावधान था, जिसके विरूद्ध राशि 469 लाख का व्यय किया गया वर्ष 2013–14 में 12 करोड रूपये का प्रावधान के विरूद्ध 11.64 लाख रूपये करोड व्यय किये गये तथा वर्ष 2014–15 वित्तीय लक्ष्य राशि 20 लाख रूपये करोड के विरूद्ध नवम्बर 2014 तक राशि 5.70 रूपये करोड व्यय किए गए।

योजनार्न्तगत वर्मी कम्पोस्टपिट का निर्माण, फार्म फील्ड् स्कूल, कृषक प्रशिक्षण कार्यशाला राज्य के अन्दर एवं राज्य के बाहर भ्रमण आदि घटकों का प्रावधान किया गया है। इसके साथ राज्य में जैविक उत्पादों का प्रमाणीकरण हेतु जैविक प्रमाणीकरण संस्था का गठन किया गया जैविक उत्पौदों के प्रमाणीकरण हेतु पंजीयन शुल्कक में 50 प्रतिशत अनुदान भी लागू की गई है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत जैविक खेती के विकास हेतु वर्ष 2013–14 में एस.एल.एस.सी. में राशि 300 लाख आबंटन के विरूद्ध मार्च 2014 तक राशि 272.48 लाख व्यय किए है तथा वर्ष 2014–15 वित्तीय वर्ष राशि 300 लाख रूपये के विरूद्ध नवम्बर 2014 तक राशि 150 लाख रूपए का व्यय किया गया।

4– जैविक खेती से लाभ – जैविक खेती से उत्पन्न फसल न केवल स्वास्थ्य के लिए बल्कि पर्यावरण के लिए भी अनुकूल होती है जैविक कृषि पद्धति से उत्पादित शुद्ध अनाज, सब्जी, फलों का सेवन करने से देश के करोडों रूपये (स्वास्थ्य पर होने वाले खर्च) की बचत की जा सकती है। जैविक खेती की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर उत्पादकता बढाने में पूर्णतः सहायक है वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पाादन की लागत तो कम होती है इसके साथ ही कृषक भाईयों को आय अधिक प्राप्त् कर सकते है आधुनिक समय में निरन्तर बढती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यंत लाभदायक है। मानव जीवन के सर्वागीण विकास के लिए नितांन्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हो, शुद्ध वातावरण रहे एवं पोष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पद्धतियों को अपनाना होगा। जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमे खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

1) कृषकों की दृष्टि से लाभ –

I– भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
II– सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
III– रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है।

IV– फसलों की उत्पादकता में वृद्धि

2) मिट्टी की दृष्टि से लाभ –

I– जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
II– भूमि की जलधारण क्षमता बड़ती है।
II– भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

3) पर्यावरण की दृष्टि से –

I– भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है।
II– मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
III– कचरे का उपयोग, खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है।
IV– फसल उत्पापदन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि।
V– अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

जैविक खेती की एवं रासायनिक खेती की तुलनात्मक उत्पादकता (जैविक खेती से फसलों की उत्पादकता रासायनिक खेती की तुलना में करीब 20 से 25 प्रतिशत तक बढ जाता है)

क्रमांक	फसल	जैविक खेती में उत्पादकता	रासायनिक खेती से उत्पादकता	जैविक खेती की अधिक उत्पादकता का प्रतिशत
1	गन्ना (टन में)	942	817	15.26
2	चावल (क्विंटल में)	88	78	12.82
3	मूगंफली (क्विंटल में)	18	14	28.57
4	सोयाबीन (क्विंटल में)	74	51	45.09
5	गेंहू (क्विंटल में)	45	35	28.57
6	फल तथा सब्जियां	15	14	7.14

जैविक हरी खादों में पोषक तत्व प्रतिशत में

क्रमांक	जैविक खाद	पोटाश	फास्फोरस	नाइट्रोजन
1	वर्मी कम्पोस्ट	0.67	2.20	1.60
2	कम्पोस्ट	1.07	1.92	1.24
3	प्रेसमड	1.31	1.34	1.59
4	जल कुम्भी	2.30	1.00	2.00
5	मुर्गीखाद	2.35	2.93	2.87
6	नीम केक	1.4	1.00	5.2
7	सन्फ्लावर	1.9	2.2	7.9
8	विनाल	1.6	1.8	2.5

निष्कर्ष –

जैविक कृषि से संबंधित इस लेख में हमने जैविक कृषि से होने वाले लाभ एवं उत्पादकता का वर्णन किया है कि किस प्रकार जैविक कृषि की गुणवत्ता कृषि विकास में सहयोग प्रदान कर रही है एवं पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभदायक सिद्ध हो रही है। विभिन्न प्रदेशों की सरकारे जैविक खेती को प्रोत्साहित कर रही है। म.प्र. में 1565 गांवो में पूरी तरह जैविक खेती हो रही है प्रदेश में 29 लाख हैक्टेयर भूमि जैविक खेती के लिये उपयुक्त पायी गई

है प्रदेश में जैविक क्षेत्रों का चयन किया जा रहा है। कृषि विभाग के द्वारा क्षेत्रों के अनुसार जैविक फसलों का चयन निःशुल्क मिट्टी का परीक्षण जैविक खेती के लिए भूसुधार हेतु चूना, रॉक, फास्फेंट एवं कम्पोस्ट उपयोग हेतु प्रोप्साहन अनुदान, जैविक खाद एवं जैविक कीट नियंत्रण हेतु प्रोत्साहन अनुदान, आनफार्म जैविक खाद हेतु कृषकों को सहायता एवं विभागीय अमले व कृषकों को जैविक खेती की प्रशिक्षण योजना से जैविक खेती विस्तारीकरण में तेजी आई है जैविक खेती के मुख्य आदानों जैसे मृदा एवं पोषक पौधे तत्व प्रदायक जैविक कीटनाशक बीजों की किस्में , उन्नयत तकनीक आदि है जो जैविक खेती के सिद्धांत के अंतर्गत आते है मिट्टी के रायायनों के दुष्प्रभाव कम करने तथा जैविक खेती हेतु अनुकूल परिस्थितियां निर्मित करने हेतु आवश्यक उपाय किये जाये, जैव ऊर्जा विशेषकर गोबर गैस, ऊर्जा के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता का खाद भी प्रदाय करते है। इसके अंतर्गत ग्रामीण व्यवसाय केन्द्र की योजना के माध्यम से जैविक आदानों के उत्पादन प्रमाणीकरण एवं विपणन द्वारा ग्रामीण युवकों को व्यवसाय के अवसर उपलब्ध कराने हेतु नीति हर संभर प्रोप्साहन देगी। जिसके लिए उन्हें जैविक आदान उत्पादन एवं विपणन से संबंधित पर्याप्त प्रशिक्षण एवं व्यवसाय हेतु अवसर प्रदान किये जायेगा। गांवो में जैविक खाद बनाने की प्रक्रिया को सम्पूर्ण स्च्छता मिशन से जोडा जायेगा।

संदर्भ सूची –

- www-scientificworld-in-/2016/01/organic&forming&article
- e-Paper patrika.com
- जैविक कृषि नीति
- मध्यप्रदेश कृषि डाट कॉम
- किसान कल्याण तथा कृषि विभाग, भोपाल
- सत्याग्रह
- कृषि बुलेटिन
- करूक्षेत्र
- News 18 Hindi
- Denik Bhasker

❑❑❑